International Journal of Applied Research 2022; 8(10): 161-163

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(10): 161-163
www.allresearchjournal.com
Received: 10-07-2022
Accepted: 16-08-2022

डॉ. बी. पी. सिंह
शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी, महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सविता पटेल
शोधार्थी, भूगोल विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. बी. पी. सिंह
शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी, महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

शहडोल संभाग में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की संभावनाएँ : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. बी. पी. सिंह, सविता पटेल

सारांश
वर्तमान में पर्यटन को महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र में से एक माना जाता है, जो भारत के कई राज्यों के विकास को प्रेरित करता है। पर्यटन एक विपणन योग्य उत्पाद प्रदान करता है, जो बाहर से कच्चे माल पर निर्भर नहीं करता है। यह पेपर पर्यटन और संसाधन विकास के लिए समस्याओं और रणनीतियों का विश्लेषण करता है, जो पर्यटन के भविष्य के विकास में काफी संभावनाएं रखता है। आतिथ्य, जिस आधार पर मध्य प्रदेश पर्यटन का भवन बना है, मध्य प्रदेश के लिए स्वदेशी है, जो अपने यात्रियों को सुखद आश्चर्य से भरे हुए, जंगल और रेगिस्तान, वन्यजीव अभयारण्यों, पहाड़ियों और मैदानों, और झीलों, आदिवासी भीतरी इलाकों आदि के साथ रंगीन अनुभव प्रदान करता है। खराब बुनियादी ढांचा, अप्रभावी विपणन और संसाधनों का अक्षम प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि पर्यटक स्पष्ट रहें, तो आश्चर्य की बात नहीं है, मध्य प्रदेश देश के कुल पर्यटक यातायात में 2% से थोड़ा अधिक योगदान देता है, जबकि पड़ोसी राजस्थान का हिस्सा 4% से अधिक है। इस क्षेत्र में अधिकांश पर्यटन नियोजन तदर्थ प्रतीत होता है। इसलिए, भविष्य की दिशाओं को स्पष्ट रूप से चार्ट करते हुए दूर जाना और निश्चित कार्य योजना तैयार करना आवश्यक है क्योंकि राज्य तीन यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों, नौ राष्ट्रीय उद्यानों और 25 वन्यजीव अभयारण्यों के साथ–साथ कई अन्य विविध पर्यटन आकर्षणों से सुसज्जित है। अविश्वसनीय भारत का अपना टैग। पेपर उन कारकों का अध्ययन करने का प्रयास करता है जिन्होंने मध्य प्रदेश राज्य की पर्यटन स्थल के रूप में लोकप्रियता को जन्म दिया है। केस स्टडी का उद्देश्य इस बात का भी गहन विश्लेषण करना है कि कैसे विज्ञापन अभियान ने राज्य में ब्रांड छवि के साथ पर्यटन के विकास में मदद की है।

कूटशब्द : अतुल्य भारत, यूनेस्को विश्व धरोहर, स्थल वन्यजीव अभयारण्य, ब्रांड छवि ।

प्रस्तावना
पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसमें किसी भी क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यवरणीय विकास की क्रियाएँ आबद्ध है। अतएव पर्यटन का निरंतर विकास करके आधारभूत संरचना का विकास संभव हो सकता है। पारिस्थितिकी पर्यटन के माध्यम से राष्ट्रीय कोष में दुर्लभ विदेशी मुद्रा की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही रोजगार के नये–नये अवसर भी सृजित होते है। यही कारण है आज प्रत्येक देश अपनी खूबियों का प्रचार–प्रसार करके, पूरी दुनिया में पर्यटकों को अपने देश के पर्यटन के लिए आकर्षित कर रहा है। हमारे देश में पर्यटन की अथाह अलौकिक क्षमता का एहसास अब भारत सरकार को हो गया है। यही कारण है कि अब सरकार भी पर्यटन उद्योग की विकास की राह में मील का पत्थर मानने लगी है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर हमारे देश के पास पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार संभावनाएँ हैं। यहाँ की प्राचीन जीवन संस्कृति, मूल्य, रहन–सहन, धार्मिक आस्थायें, लोक कलायें, रीति–रिवाज आदि अनेक आकर्षक हैं जिनसे पर्यटक आकर्षित होकर भारत चले आते हैं, ज्ञानवर्द्धन तथा भावनात्मक एकता के लिए पर्यटन का प्राचीन काल से ही एक प्रसिद्ध है। सिलहरा की गुफाएँ एवं वहाँ की शिलालेख तथा लखवरिया की गुफाओं पर निर्मित असंख्य कुण्ड आज भी अपने रहस्यों को छिपाएँ शोध एवं खोज कर्ताओं के लिए विशिष्ट स्थान रहा है। लोगों के रहन–सहन, तौर–तरीके, उनकी संस्कृति, भाषा एवं खान–पान का प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करना केवल पर्यटन द्वारा ही सुलभ हो सकता है। भारत में यह उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है और इस उद्योग से पर्याप्त मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है। विभिन्न होटलों, यात्रा एजेन्सियों, यातायात कंपनियों आदि के द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं, वह पर्यटन सेक्टर की ही उपलब्धि है। पर्यटन का सामान्य अर्थ ''सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौन्दर्य स्थलों का थोड़े समय के लिये भ्रमण करना है।

जेम्स फिशर के अनुसार–''पर्यटन वह संसाधन है, जो मानव की आवश्यकताओं, रूचियों एवं इच्छाओं की पूर्ति करता है।''

ऐतिहासिक कला का ही एक नमूना सोहागपुर का विराट मंदिर है जो पुरातत्व विभाग के संरक्षण में होने के बावजूद New Tourism", शालिनी सिंह (1972) का "Cultural Tourism in Awadha Region (W ith Special Reference to Lucknow), आदि अन्य कार्य हैं। स्थानीय जन–समुदाय के सहयोग से यहाँ के पर्यटन संसाधनों को विकास की दिशा में व्यक्ति को रोजगार प्रदान करना एवं मानवाधिकार की रक्षा करना शासन की प्रमुख जिम्मेदारी है।

शोध क्षेत्र से सम्बन्धित पूर्व में किए गए शोधों की संक्षिप्त समीक्षा (A Brief Review of the work already done in the field):

भूगोल विषय में पर्यटन का भूगोल, भूगोल की नवोदित शाखा है। कुछ भूगोलवेत्ताओं ने पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। जिनका विवरण सिंह शालिनी के शोध पत्र ळमवहतंचीमंते वद ज्वनतपेउ ळमवहतंचील में देखने को मिलता है। पर्यटन भूगोल क्षेत्र के महत्वपूर्ण शोध कार्य हैं जिनका विवरण सिंह शालिनी के शोध पत्र "Geographears on Tourism Geography" टूरिज्म रिक्रेशन रिसर्च जनरल, वाल्यूम 17 (1) वर्ष 1992 के पृ. 60 से 67 में देखने को मिलता हैं। पर्यटन भूगोल के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध कार्य (Mc Maraay 1930 : Browh-1935; माध्यम है। भारत वर्ष में भूगोलवेत्ताओं ने जो कार्य पर्यटन के क्षेत्र में किए, उनमें ए.के. भाटिया, (1983) "Tourism in India History and Development" Robinson (1976)

प्रेम सद्भावना अन्तर्राष्ट्रीय एकता, शान्ति जैसी अनेक भावनायें सन्निहित हैं।

भौगोलिक अध्ययन (सन् 1980–2010 तक) अप्रकाशित शोध प्रबन्ध अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, में शोधार्थी द्वारा बताया गया है कि पर्यटन की दृष्टि से भारत बहुत संभावनापूर्ण देश है, किन्तु विश्व पर्यटन की तुलना में हमारा देश अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाया है। शहडोल संभाग जो एक पिछड़ा संभाग है जिसमें पारिस्थितिकी पर्यटन की अपार संभावनाएँ है, कोई भी अध्ययन इस संभाग में नहीं किया गया है। इस संभाग में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास से यहाँ की आदिवासियों में फैली गरीबी, बेकारी से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है। अतः इस अध्ययन की आवश्यकता शोधार्थी द्वारा महसूस की गई है।

आज विश्व में पर्यटन एक वृहद उद्योग के रूप में उभर रहा है। पूर्व शताब्दी के पहले का विशिष्ट स्थान रहा है। लोगों के रहन–सहन, तौर–तरीके, उनकी संस्कृति, भाषा एवं खान–पान का प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करना केवल पर्यटन द्वारा ही सुलभ हो सकता है। भारत में यह उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है और इस उद्योग से पर्याप्त मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है। विभिन्न होटलों, यात्रा एजेन्सियों, यातायात कंपनियों आदि के द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं, वह पर्यटन सेक्टर की ही उपलब्धि है। पर्यटन का सामान्य अर्थ ''सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौन्दर्य स्थलों का थोड़े समय के लिये भ्रमण करना है। जेम्स फिशर के अनुसार–''पर्यटन वह संसाधन है, जो मानव की आवश्यकताओं, रूचियों एवं इच्छाओं की पूर्ति करता है।''

शहडोल संभाग के अधिकांश पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल खंडहर एवं भग्नावशेष के रूप में पाये जाते हैं जो उचित रख–रखाव के अभाव में आकर्षण विहीन होते जा रहे हैं। अमरकंटक में नर्मदा उद्गम मंदिर के समीप 6 मंदिरों का समूह है जिन्हें 'आनंद महल' कहते हैं, अपनी कलात्मक रचना के लिए

समीपीय खण्डहरों से प्राप्त की गई थी, आज ड्राईग रूम की सोभा बढ़ा रही हैं। प्रदेश का समय के कुचक्रों से अपने–आप को बचाने में सफल नहीं हो पा रहा है और धीरे–धीरे ध्वस्तता की ओर अग्रसर हैं ऐतिहासिक कला का एक वृहद खजाना ''राजा वाग'' (सोहागपुर) में भी कैद है जो विभिन्न प्रकार की प्रशस्तर मूर्तियों के रूप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल बाँधवगढ़ का अविजित किला है। यहाँ के अन्य ऐतिहासिक स्थलों में सोहागपुर का किला ग्राम कोतमा की अज्ञात गुफायें तथा अन्तरा के समीप ध्वस्त खण्डहर इत्यादि मुख्य हैं।

वर्तमान में शहडोल संभाग में बढ़ती हुई आबादी, बेकारी, भूखमरी, रोजगार के साधनों की कमी यहाँ की सबसे बड़ी ज्वलंत एवं तात्कालिक समस्या है। हमारे संविधान में नीति निर्देशक सिद्धांत एंव मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत प्रत्येक

"Focus on Sustainable Tourism"; सिंह स्मिथ फिश एवं रिचर (1972) का "Tourism Environment : Nature and Culture" आदि महत्वपूर्ण कार्य हैं। उपरोक्त कार्यो के साथ–साथ सच्चिदानन्द सिंह का शोध ग्रन्थ पर्यटन एवं मनोरंजन का भूगोल (वाराणसी के विशेष सन्दर्भ में), अरोरा एत्रत्रेय (1971) का कुमायू में पर्यटन उद्योग, जसवीर सिंह कौर (1985) का "Himalayan Pilgrimage and Geography of Tourism"; तेजवीर सिंह (1975) का "Tourism and Tourist Industry"; तेजवीर सिंह एवं शालिनी सिंह (1991) का इन कार्यो के साथ–साथ सिंह बी.पी. एवं सिंह सुमन्त (1999) का पर्यावरणीय विविधतायें एवं पर्यटन, सिंह बी.पी. (2004) मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास : समस्यायें एवं संभावनाएँ, प्रजापति, शिवमूर्ति, वन्य जीव क्षेत्र एवं पर्यटन : विन्ध्य प्रदेश का भौगोलिक अध्ययन, सिंह सतेन्द्र (2004) पन्ना जिले में परिस्थितिकी पर्यटन, इस क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण शोध कार्य हैं। परिस्थितिकी पर्यटन पर डॉ. सुमन्त सिंह का मध्यप्रदेश में परिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाएँ, राजबहादुर कोरी का बघेलखण्ड में परिस्थितिकी पर्यटन महत्वपूर्ण कार्य हैं। इसके अलावा सिंह संदीप–उमरिया जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं संभावनाएँ: ग्रामीण धरोहर एवं वन्य जीव के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में बताया गया है कि पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की कई सम्भावनाओं से जुड़ा है, जिसमें पर्यावरणीय विकास के साथ–साथ आपसी पर्यटन विश्व में आपसी सद्भाव, व्यापार विनिमय तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान का सर्वोत्कृष्ट अब यह एक ऐसी गतिविधि के रूप में मान्य है,

5 दशकों में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन की गति धीमी थी, जिसमें बाद के वर्षो में तेजी वर्ष आयी है। शहडोल संभाग पारिस्थितिकी पर्यटन की दृष्टि से अनेक संभावनाओं को अपने आप में समेटे हुए हैं। संभाग के पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास से हजारों पढ़े–लिखे, अनपढ़ युवा, बच्चे, बूढ़े एवं हर तरह के लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। इस दृष्टि से यह क्रियाकलाप अपने आप में एक व्यापक संसाधन है। जो आज हमारी बढ़ती हुई आबादी के नियोजन एवं विकास के चौमुखी दिशा हेतु उपयोगी है। संभाग के कई भाग जो आज भी विकास की दृष्टि से काफी पिछड़े हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देकर काफी हद तक गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। 1980 के दशक में यह उद्योग असाधारण गति से बढ़ा है। आज विश्व के सभी देश इस तथ्य से परिचित हैं कि विश्व अर्थव्यवस्था में पर्यटन का जितना योगदान है, उतना किसी उद्योग में नही हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion)

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य में शहडोल संभाग एवं उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाओं का पता करना।

1. शहडोल संभाग के पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों के स्थानीय वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण करना एवं उनका एक दूसरे में संबंधों को ज्ञात करना।

2. संभाग के वन्यजीव, प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटन आकर्षण के केन्द्र जो निरंतर अपने स्वभाविक स्वरूप को खोते जा रहे हैं उनके संरक्षण हेतु योजना प्रस्तुत करना।
3. शहडोल संभाग में पारिस्थितिकी पर्यटन के प्रभावों का मूल्याकंन करना तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों का पता लगाना एवं उन्हें कम करने के लिए योजना बनाना। पर्यटन केन्द्रों की समस्याओं को उजागर करना तथा भावी विकास के लिए दिशा प्रतिपादित करना।
4. बहुसंख्यक लोगों को पारिस्थितिकी पर्यटन की गतिविधि से परिचित कराना एवं राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर यहाँ के पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों को प्रकाश में लाना।
5. पारिस्थितिकी पर्यटन विकास द्वारा इस संभाग में फैली हुई बेकारी एवं आर्थिक विपन्नता जैसी समस्या को कम करना तथा बड़ी संख्या में लोगों को इस दिशा में उन्मुख करना।

संदर्भ

1. अग्रवाल, अजय–मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास की संभावनाएँ, योजना, वर्ष 45 (2001), अंक 3
2. चोपड़ा सुहिता–टूरिज्म डेवलपमेंट इन इण्डिया, नई दिल्ली, 1981
3. छिब एस.एन.–पर्सपेक्टिव आन इण्डियन टूरिज्म इन इण्डिया, 1981
4. डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंडबुक–शहडोल संभाग, 1980, 1990, 2011, 2011
5. सिंह, कर्ण–रेडियन टूरिज्म पर्सपेक्ट आन ए ग्रेट एडवेंचर
6. वर्मा, संजय कुमार–पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद
7. दीक्षित, के.के. एवं गुप्ता, जे.पी.–पर्यटन के विविध आयाम
8. कुमार, प्रमिला–मध्यप्रदेश का प्रादेशिक भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
9. नेगी, जगमोहन–पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
10. नेगी, जगमोहन–सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल, तक्षशिल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. संस्कृति पर आधारित पर्यटन की संभावनाएँ,
12. मुरुगन। ए, ''चौलेंज एंड चेंजेस इन इंडियन टूरिज्म'', साउथ एशियन जर्नल ऑफ सोशल पॉलिटिकल साइंसेज, वॉल्यूम 6, नंबर 1, पीपी.103–107, दिसंबर 2005।
13. म.प्र. में पर्यटन पुस्तक में प्रकाशित, आदित्य प्रकाशन, बीना, 1999
14. नेगी, जगमोहन–पर्यावरण एवं पर्यटन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
15. रावत, ताज–पर्यटन विकास के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
16. सहाय, शिवस्वरूप–पर्यटकों का देश भारत, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली
17. सिंह, बी.पी.–मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास, समस्याएँ एवं संभावनाएँ, परियोजना प्रतिवेदन, यू.जी.सी. प्रायोजित, भोपाल, 2002–03
18. सिंह, बी.पी. एवं सुमन्त (2000)–मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन बीना
19. सिंह, बी.पी.–पर्यावरणीय विभिन्नताएँ एवं पर्यटन, विन्ध्यांचल के विशेष सन्दर्भ में, शोध परियोजना प्रतिवेदन (1998–99) यू.जी.सी. क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल
20. मध्य प्रदेश की जीडीपी (2018) https://data.gov.in/keywords/gdp-madhya-pradesh से लिया गया